31

परमेश्वर की चेतावनियों की अनदेखी करने की मूर्खता

(9:20, 21; 11:14, 15)

वाशिंगटन के नीले आसमान से सैकड़ों फुट तक भूरा हुआ माउंट सेंट हैलंस इतरा रहा था। साफ लग रहा था कि शीघ्र ही बहुत बड़ा ज्वालामुखी फटने वाला है। पैट्रोलिंग करती कारों और हैलीकॉप्टरों से हर बड़े चौराहे पर लगे बैटरी से चलने वाले सिग्नलों से, रेडियो और टेलीविज़न से, शार्टवेव और बैंड वालों से लोगों को ''सावधान!'' होने के लिए कहलवाया गया। नदियों के किनारे बसे गांव, जान बचाने के लिए लोगों के भाग जाने से टूरिस्ट कैंप और सड़कें खाली हो गईं।

चेतावनियों के बावजूद हैरी ने हटने से इनकार कर दिया। हैरी, माउंट सेंट हैलंस से पांच मील उत्तर में, स्पिरिट लेक का केयरटेकर था। रेंजरों ने उसे चेतावनी दी, पड़ोसियों ने उससे छोड़ जाने की मिन्नत की और हैरी की बहन ने बात बूढ़े आदमी के दिमाग में डालने की कोशिश की, परन्तु हैरी ने किसी की बात की ओर ध्यान न दिया। राष्ट्रीय टेलीविज़न का मज़ाक उड़ाते हुए उसने कहा, ''हैरी से बढ़कर इस पहाड़ को कोई नहीं जानता और मैं जानता हूं कि यह उस पर नहीं फटेगा।''

18 मई 1980 के दिन, जब पहाड़ के नीचे की उबली गैसें उभरकर उछलती हुईं पृथ्वी पर आईं तो हैरी ने अण्डे और बचा हुआ गोश्त बनाकर अपनी सोलह बिल्लियों को खिला दिया और अभी-अभी कटे बग़ीचे के चारों ओर *पिट्टुनियास* के पौधे लगाने लगा। प्रात: 8:31 पर पहाड़ में आग लग गई।

यह ज्वालामुखी हीरोशीमा को तहस-नहस कर देने वाले परमाणू बम से पांच सौ गुणा अधिक वेग से आया था। लाखों टन पत्थर टूट कर उस बादल में मिल गए और आकाश में दस मील तक फैल गए। आवाज़ की गति से भी तेज़ धक्का लगने से 150 वर्ग मील तक सब सपाट हो गया। पचास फुट ऊंची कीचड़ और राख की दीवार पहाड़ के साथ-साथ बहती हुई नीचे आ गई।

वाशिंगटन के कोने में जहां वह रहता था, विरह के गीत गाने वाले अब इस हठी बूढ़े हैरी की गाथा गाते हैं, जिसने चेतावनियों पर ध्यान देने से इनकार कर दिया था।[1]

कई पाठों से, हमने पापियों के लिए परमेश्वर की तुरही की चेतावनियों पर चर्चा की थी, जिसमें पहली चार तुरहियां बजने पर परमेश्वर ने प्राकृतिक आपदाओं का इस्तेमाल लोगों को अपनी खतरनाक स्थिति से चौकस कराने के लिए किया। पांचवीं तुरही बजने पर, शैतानी टिड्डियों ने पाप द्वारा लाई जाने वाली पीड़ा से मनुष्यों को सताया। छठी मुहर से पापियों को होश में लाने के लिए ''नरक के घुड़सवार'' आए। दुख की बात है कि उनका जवाब बूढ़े हैरी जैसा था। कुल मिलाकर लोगों ने चेतावनियों की ओर ध्यान नहीं दिया।

> और बाकी मनुष्यों ने जो उन मरियों से न मरे थे, अपने हाथों के कामों से मन न फिराया, कि दुष्टात्माओं की, और सोने और चांदी, और पीतल, और पत्थर, और काठ की मूरतों की पूजा न करें, जो न देख, न सुन, न चल सकती हैं। और जो खून, और टोना और व्यभिचार, और चोरियां, उन्होंने की थीं, उन से मन न फिराया (9:20, 21)।

सात तुरहियों का अध्ययन करते हुए मेरे ध्यान में 2 परतस 3:9, 10 आया:

> प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नाश हो; बरन यह कि सबको मन फिराने का अवसर मिले। परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे।

ये आयतें कई महत्वपूर्ण सच्चाइयां सिखाती हैं: (1) प्रभु आने में देरी करता है क्योंकि वह लोगों का नाश नहीं चाहता। (2) प्रभु की इच्छा है कि पापी मन फिराएं, क्योंकि मन फिराकर ही वे उसकी ओर लौट सकते हैं। (3) कहीं पर जब प्रभु का धीरज जवाब दे देगा तो प्रभु का दिन आ जाएगा। फिर जिन्होंने उसकी चेतावनियों की अनदेखी की थी, उसके क्रोध की बड़ी सामर्थ को महसूस करेंगे। इनमें से प्रत्येक विषय-वस्तु सात तुरहियों पर आयतों में बनाई गई है।

इस पाठ में हम छठी तुरही के अपने अध्ययन को समेटेंगे (9:20, 21) और सातवीं की तैयारी करेंगे (11:14, 15)।

प्रभु नहीं चाहता कि लोगों का नाश हो (9:20)

''प्रभु ... तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नाश हो ...'' (2 पतरस 3:9)।

हमने सुझाव दिया है कि पहली चार तुरहियां *संसार पर* पाप के प्रभाव को दर्शाती हैं, पांचवीं तुरही *स्वयं पापी पर* पाप के प्रभाव को दर्शाती है और छठी तुरही *दूसरों पर* पाप के

प्रभाव से अधिक सम्बन्धित थी। यह सब ''लोगों की आत्मनिर्भरता और घमण्ड के बचावों के द्वारा परमेश्वर के अपने ढंग को इस्तेमाल करने के प्रयासों'' को दर्शाता है।[2] लियोन मौरिस ने लिखा है:

> परमेश्वर हमें मन फिराने के लिए बुलाने के लिए हमारे पापों के बुरे परिणामों का इस्तेमाल करता है। यूहन्ना मनुष्य के पाप के परिणाम के रूप में शैतानी शक्तियों के छूटने को एक दृष्टिकोण से देखता है। परन्तु एक और दृष्टिकोण से यह परमेश्वर की ताड़ना है और परमेश्वर की ताड़ना बेकार नहीं हो सकती। सही ढंग से ग्रहण किए जाने पर यह सुधार में सहायक होती है।[3]

परमेश्वर को हर व्यक्ति का ध्यान है। उसे यूहन्ना के समय में लोगों का ध्यान था (प्रकाशितवाक्य 9:20)। उसे आपका ध्यान है; उसे मेरा ध्यान है।

प्रभु चाहता है कि सब लोग मन फिराएं (9:20, 21)

परमेश्वर की इच्छा

परमेश्वर चाहता है कि हर कोई मन फिराए: वह नहीं चाहता कि ''कोई नाश हो; बरन यह कि सबको मन फिराने का अवसर मिले'' (2 पतरस 3:9)। पाप हमें परमेश्वर से दूर करता है (यशायाह 59:1, 2), और परमेश्वर की इच्छा है कि हम पाप से मुड़कर उसके पास लौट आएं।[4]

डैनियल रसल ने कहा है:

> इसीलिए बाइबल मन फिराने के लिए एक लम्बा आग्रह है। मूसा ने लोगों से मन फिराने के लिए कहा। भविष्यवक्ता पुकारते हैं, ''लौट आओ, लौट आओ, तुम क्यों मरो?'' यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जंगल, उजाड़, में से गंवार बनकर मन फिराने के लिए कहने आता है। अपनी शिक्षा में यीशु ने बार-बार मन फिराने के लिए कहा। ''मैं धर्मियों को नहीं, बल्कि पापियों को मन फिराने के लिए बुलाने आया हूं।'' पतरस कहता है, ''मन फिराओ और तुम में से हर एक बपतिस्मा ले ... मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं।'' मार्स नामक पहाड़ी पर पौलुस ने घोषणा की थी कि परमेश्वर ने यदि मनुष्य की अज्ञानता के कारण पाप की कभी अनदेखी की थी तो अब वह समय बीत गया है: ''अब [वह] हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।'' ... बाइबल इस बात में उग्र है कि यह मानवीय स्वभाव में तीव्र परिवर्तन की मांग करती है और यह स्पष्ट कर देती है कि किसी बुरे व्यक्ति को भले मनुष्य में बदलने के लिए सबसे पहली और बुनियादी और आवश्यक शर्त यह है कि वह व्यक्ति मन फिराए।[5]

मनुष्य का उत्तर

सात तुरहियां यह घोषणा करती हैं कि मनुष्यजाति को मन फिराने के लिए परमेश्वर

अपनी ओर से जो कर सकता था, उसने कर दिया है। परन्तु यूहन्ना को लिखना पड़ा कि कुल मिलाकर मनुष्यजाति ने पश्चात्ताप नहीं किया है। आयत 20 कहती है, ''और बाकी मनुष्यों ने जो उन मरियों से न मरे थे, अपने हाथों के कामों से मन न फिराया, ...।'' आयत 21 कहती है, ''उन्होंने... मन न फिराया।''

20 और 21 आयतों में यूहन्ना ने स्पष्ट पापों की बात की है, जिनसे उन्होंने मन नहीं फिराया था। उसने कहा कि लोग उन्हीं कार्यों और व्यवहार में बने रहे, जिनसे वे नष्ट हो रहे थे। पहले तो *हृदय के पाप* थे, विशेषकर मूर्तिपूजा का पाप: उन्होंने ''अपने हाथों के कामों से मन न फिराया, कि दुष्टात्माओं की,[6] और सोने और चांदी, और पीतल, और पत्थर, और काठ की मूरतों की पूजा न करें, जो न देख, न सुन, न चल सकती हैं'' (आयत 20ख)।

बहुत पहले, परमेश्वर ने कहा था:

> तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना।
>
> तू अपने लिए कोई मूर्ति खोदकर न बनाना, न किसी की प्रतिमा बनाना, जो आकाश में, या पृथ्वी पर, या पृथ्वी के जल में है। तू उनको दण्डवत न करना, और न उनकी उपासना करना; ... (निर्गमन 20:3-5)।

पाप की जड़ में किसी व्यक्ति या वस्तु को परमेश्वर की जगह देना होता है। प्रकाशितवाक्य 9:20 पढ़कर यूहन्ना के पाठकों के मन में ''एशिया माइनर की अनगिनत मूर्तियों के मन्दिर'' और ''राजा को समर्पित मन्दिरों का बढ़ना'' रहा होगा।[7] आज वे ''मूर्तियों के प्राचीन मन्दिर संग्रहालयों की शोभा हैं,''[8] परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि लोगों ने मूर्तियों की पूजा करना बन्द कर दिया है। कई समाजों में मूर्ति पत्थर का निराकार टुकड़ा या पेड़ का खूंट हो सकता है। धर्म को मानने वाले कई लोग मरियम, यीशु मसीह और उन लोगों की मूर्तियों के सामने झुकते हैं, जिन्हें वे ''संत'' कहते हैं। ऐसी रीति के बारे में एल्ड्रेड एकोल्स ने ये टिप्पणियां की हैं:

> आराधना की कोई भी नकली वस्तु अर्थात किसी संत, कुंआरी मरियम की मूर्ति या चाहे वह बाल यीशु की मूर्ति ही क्यों न हो, झूठा देवता है और वह शैतान है। जब हम सोने या मिट्टी की मूर्तियों को जादुई शक्तियों वाला मानते हैं तो हम जादूगरी जैसा ही काम कर रहे होते हैं। ...मूर्तियों की पूजा करने वाले लोग यह दावा करते हैं कि वे उस मूर्ति के नहीं, बल्कि जिस व्यक्ति की यह मूर्ति है उसके सामने झुक रहे हैं। अपनी बात पर टिके रहने के लिए उनके लिए यह कठिन स्थिति है, क्योंकि वे आमतौर पर होने वाले किसी चमत्कार को कुंआरी की किसी मूर्ति से ही जोड़ते हैं या किसी विशेष मूर्ति के सामने प्रार्थना करने के लिए संसारभर का भ्रमण कर लेते हैं।[9]

अपने आप को अति स्व-धर्मी समझने से पहले हमें यह अहसास होना आवश्यक है कि हम में से कई लोग उन ''मूर्तियों'' की पूजा करते हैं, जो उससे भी अधिक रहस्यमय हैं, परन्तु हैं वे मूर्तियां ही:

> ... [हम में से अधिकतर लोग] गढ़े हुए पत्थर या पत्थर की आंखों वाली

> लकड़ी की मूर्तियों के विशाल पक्षियों के सामने नहीं झुकते ... परन्तु फिर भी हम यहोवा से मुकाबला करने वाले अन्य देवाताओं के सामने माथा टेकते हैं।
>
> हो सकता है कि हम सोने के बछड़े के सामने कभी न झुके हों, परन्तु हम फिर भी परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं। हो सकता है कि हमने बाल की गढ़ी हुई मूर्ति के सामने कभी घुटने न टेके हों, लेकिन नोट पर भी एक उकेरी हुई मूर्ति है। क्या हम में से कोई कह सकता है कि हम ने कभी किसी समय महत्वाकांक्षा, व्यर्थ या अपने आप को परमेश्वर की आराधना से अधिक महत्व नहीं दिया? इस जीवन में बहुत सी वस्तुएं हैं जो *अच्छी* हैं परन्तु वे *परमेश्वर* नहीं हैं।[11]

कुलुस्सियों 3:5 में पौलुस ने कहा कि ''लोभ मूर्तिपूजा के बराबर है।'' अपने जीवन में हम जिसे भी *प्राथमिकता* देते हैं, वही हमारा ईश्वर होता है।[12]

यूहन्ना ने भी ज़ोर दिया कि मनुष्य जाति *शरीर के पाप* करने में लगी रही। प्रभु को छोड़ किसी और चीज़ पर ध्यान लगाने के स्पष्टतया भयंकर परिणाम हैं। जब जड़ मूर्तिपूजा हो तो उसका फल अभक्ति होता है। मनुष्यजाति के पतन की रूपरेखा बनाते हुए पौलुस ने कहा कि पहले ''उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है। ...'' (रोमियों 1:25)। इसका परिणाम नीचे दी गई जीवन शैली के रूप में दिखाई दिया:

> वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैरभाव, से भर गए; और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्ष्या से भरपूर हो गए, और चुगलखोर, बदनाम करने वाले, परमेश्वर के देखने में घृणित, औरों का अनादर करने वाले, अभिमानी, डींगमार, बुरी-बुरी बातों के बनाने वाले, माता-पिता की आज्ञा न मानने वाले, निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मयारहित और निर्दयी हो गए (रोमियों 1:29-31)।

प्रकाशितवाक्य 9 चार विशेष पापों की सूची देते हुए यूहन्ना के समय के नैतिक माहौल की समझ देता है: ''जो खून, और टोना और व्यभिचार[13] और चोरी उन्होंने की थी उनसे मन न फिराया''[14] (आयत 21)।

इन चार में से तीन पापों की दस आज्ञाओं में निन्दा की गई थी:[15] छठी, सातवीं और आठवीं आज्ञाएं थीं कि ''तू हत्या न करना,'' ''तू व्यभिचार न करना'' और ''तू चोरी न करना'' (निर्गमन 20:13-15)। हत्या के विरुद्ध निषेध जीवन की रक्षा के लिए था (उत्पत्ति 9:6; गिनती 35:33)। शारीरिक पाप के विरुद्ध निषेध शरीर की रक्षा के लिए था[16] (देखें 1 कुरिन्थियों 6:18; इफिसियों 5:3; 1 थिस्सलुनीकियों 4:3)। चोरी के विरुद्ध निषेध सम्पत्ति की रक्षा के लिए था। (देखें नीतिवचन 30:9; जकर्याह 5:3; इफिसियों 4:28.)

सूची में दिया गया तीसरा अर्थात ''जादूगरी'' का पाप हम में से कुछ लोगों की जानकारी में नहीं है। ''टोना'' शब्द *pharmakeia* का अनुवाद है,[17] जिससे ''फारमेसी'' शब्द निकला है। डब्ल्यू ई. वाइन ने विवरण दिया है कि ये शब्द ''मुख्यतया 'दवाइयों के

उपयोग' का संकेत था,'' परन्तु इसका अर्थ "sorcery" यानी टोना हो सकता है।[18] बाद के इस्तेमाल के सम्बन्ध में वाइन ने लिखा है:

> जादूगरी में, नशों का इस्तेमाल... आमतौर पर झाड़फूंक और रहस्यमयी शक्तियों से याचनाओं के द्वारा प्रार्थी या रोगी को दुष्टात्माओं के ध्यान और शक्ति से बचाए रखने के लिए कुशलतापूर्वक बनाए गए अलग-अलग मन्त्र, ताबीज़ वगैरह के साथ होता था, परन्तु वास्तव में यह जादूगर का प्रार्थी को रहस्यमयी शक्तियों से प्रभावित करने का तरीका था।[18]

ड्रग्स का इस्तेमाल आज भी तांत्रिकों द्वारा किया जाता है। अमेरिका में रहने वालों के लिए, नेटिव अमेरिकन चर्च[20] द्वारा पियोट[21] का इस्तेमाल एक उदाहरण है। संसारभर से अनेकों उदाहरण लिए जा सकते हैं।[22] निश्चय ही इक्कीसवीं शताब्दी के ड्रग कल्चर के लिए भी यह प्रासंगिक हो सकता है।

पक्का अतिवादी इन हत्याओं, टोनों, अनैतिक कार्यों और चोरी के बारे में पढ़कर ज़ोर देता है कि आयत 21 केवल यूहन्ना के समय के लोगों की स्थिति को दिखाती है। एक भविष्यवादी/प्रीमिलेनियलिस्ट इस बात से संतुष्ट होता है कि यह आयत भविष्य में सात वर्ष के किसी काल में संसार की स्थिति बताती है। परन्तु मेरी सिफ़ारिश है कि इनमें से किसी भी विचार के साथ जुड़ने के लिए पहले इधर-उधर देख लें। ये पाप अपश्चात्तापी संसार की विशेषता रहे हैं, इस समय भी हैं और प्रभु के लौटने तक रहेंगे।

मैं इस बात को रेखांकित करता हूं कि यूहन्ना ने हृदय के पाप और शरीर के पाप दोनों की सूची दी है। परमेश्वर को इन दोनों का ध्यान है। इसलिए मन फिराव के लिए भीतरी और बाहरी अर्थात मन और शरीर दोनों, विचार और कार्य दोनों शामिल होते हैं। सच्चा पश्चात्ताप ''मन का बदलना है जिससे जीवन में बदलाव आता है।''[23] (देखें प्रेरितों 26:20.) रॉबर्ट मुल्होलैंड के शब्दों में हमें ''भीतरी दृष्टिकोण परिवर्तन'' और ''बाहरी पुनर्निर्माण'' की आवश्यकता है।[24]

किसी समय, प्रभु का धीरज जवाब दे देगा (11:14, 15)

मन फिराना और वह भी तुरन्त, क्यों आवश्यक है? क्योंकि परमेश्वर का धीरज ऐसा नहीं रहेगा। किसी समय, वह यह फैसला ले लेगा कि और कोई भी प्रयास बेकार है। माइकल विल्कोक ने कहा है कि ''जवाब [परमेश्वर का] धीरज नहीं, बल्कि उसे पाने की मनुष्य की योग्यता है, जो जवाब देगी। वह अवस्था आ चुकी है, जहां और अवसर देने की कोई बात ही नहीं है, क्योंकि मनुष्य ने अपने आप को इतना कठोर कर लिया है कि मन फिराने की सम्भावना ही नहीं रही।''[25]

फिर ''प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे'' (2 पतरस 3:10)।

अगले एक पाठ में हम शक्तिशाली स्वर्गदूत को यह घोषणा करते सुनेंगे, ''दूसरी

विपत्ति बीत चुकी, देखो, तीसरी विपत्ति शीघ्र आने वाली है'' (11:14)। दूसरी ''विपत्ति'' छठी तुरही बजने पर विनाश करने वाली सेना का छोड़ा जाना था। वह तुरही मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर की अन्तिम आम चेतावनी थी।[26] मैरिल सी. टैनी ने लिखा है, ''ठुकराया गया सुधार विनाश बन जाता है। लोग मन नहीं फिराएंगे, तो मिटाए ही जाएंगे; क्योंकि परमेश्वर पाप को सदा के लिए सहन नहीं कर सकता। एक समय आएगा जब वह बुराई का खात्मा करने और धार्मिकता को कायम करने के लिए हस्तक्षेप करेगा।''[27]

अन्तिम ''विपत्ति'' सातवीं तुरही होगी। सातवें स्वर्गदूत के तुरही बजाने पर, ''परमेश्वर का गुप्त मनोरथ ... पूरा'' हो जाएगा (10:7)। अध्याय 11 हमें उस ''अन्तिम युक्ति'' के बारे में बताता है:

> और जब सातवें दूत ने तुरही फूंकी, तो
> स्वर्ग में इस विषय के बड़े-बड़े शब्द होने लगे
> कि जगत का राज्य हमारे प्रभु का,
> और उसके मसीह का हो गया (11:15)।

यह होने पर मन फिराने का अवसर सदा-सदा के लिए जाता रहेगा।

सारांश

पहली छह तुरहियों की ओर पीछे को और सातवीं तुरही की ओर आगे को देखते हुए हमें कई महत्वपूर्ण सबक मिलते हैं:

(1) पाप भयंकर है।

(2) पाप जिसे भी छूता है, उसे नष्ट कर देता है।

(3) पाप परमेश्वर का सामना करना है।

(4) परमेश्वर अनुग्रहकारी है और जब हम पाप करते हैं तो वह हमारे साथ धीरज बरतता है।

(5) हमें परमेश्वर के अनुग्रह से लाभ उठाना है तो मन फिराना आवश्यक है।

(6) सच्चे मन फिराव से हम अन्दर और बाहर दोनों बदल जाएंगे।

(7) समय थोड़ा है और घड़ी का कोई पता नहीं। यदि हम मन फिराना चाहते हैं तो हमारे पास केवल अभी का समय है!

तुरहियों की मुख्य सच्चाई जो मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं, वह यह है कि ''तुरहियां चेतावनी देती हैं'': परमेश्वर प्राकृतिक आपदाओं के द्वारा, पापी पर होने वाली भयंकर बातों के द्वारा और दूसरों पर पाप के पड़ने वाले खतरनाक प्रभाव के द्वारा हमें सावधान करने की कोशिश कर रहा है। कल्पना करते हुए मैं न्याय के समय किसी को यह पुकारते सुनता हूं, ''प्रभु, तू ने मुझे चेतावनी क्यों नहीं दी?'' और दुखी होकर प्रभु को यह उत्तर देते सुनता हूं, ''लेकिन मैंने तो दी थी! तुझे वह तूफ़ान याद नहीं, जिससे तेरे इलाके के घरों की छतें उड़ गई थीं? तुझे याद नहीं कि झूठ बोलने के बाद तू रात भर सो नहीं पाया

था? तुझे उस दुर्घटना का दृश्य याद नहीं, जिसमें लोगों के शरीर पिस गए थे? मैंने तुझे बार-बार चेतावनी देने की कोशिश की थी! तू ने ध्यान ही नहीं दिया!''

बहुत साल पहले जब मैं ग्रेटर ओक्लाहोमा नगर की विलेज चर्च आफ़ क्राइस्ट में प्रचार किया करता था तो एक गैर मसीही व्यक्ति जिसने हियरिंग-एड पहने होते थे, अक्सर आराधना में आता था। मैं चाहे कितना भी ज़ोर से चिलाऊं, वह शांत रहता था। कई बार तो मुझे शक होता था कि मेरे पुलपिट पर आने के समय वह हियरिंग-एड का स्विच ऑफ़ तो नहीं कर देता। मैं उस आदमी के बारे में तो नहीं जानता, परन्तु इतना जानता हूं कि आज बहुत से लोग प्रभु की चेतावनियों को सुनकर अपने कान बन्द कर रहे हैं (मत्ती 13:15)। आप मेरी बात की ओर ध्यान दें या न दें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, परन्तु मेरी मिन्नत है कि परमेश्वर की अनदेखी न करें! उस बूढ़े हैरी की तरह न बनें, जिसने चेतावनियों की अनदेखी की थी। यदि आप अभी तक प्रभु के पास नहीं आए हैं तो आज ही लौट आएं![28]

टिप्पणियां

[1]हैरी की कहानी बिली ग्राहम, *अप्रोचिंग हूफबीट्स: द फोर हॉर्समैन ऑफ़ द अपोकलिप्स* (न्यू यार्क: एवन बुक्स, 1985), 11, 12 से ली गई है। [2]जी. बी. केयर्ड, *ए कमैंट्री ऑन द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन द डिवाइन* (लंदन: एडम एण्ड चार्ल्स ब्लैक, 1966), 123. [3]लियोन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क., द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 124. [4]डैनियल रस्सल, *प्रीचिंग द अपोकलिप्स* (न्यू यार्क: अबिंग्डन प्रैस, 1935), 143-44. [5]KJV में "worship devils" है परन्तु शैतान तो एक ही है। अधिक सही शब्द ''दुष्टात्माओं'' ही है। पुराने और नये दोनों नियमों में मूर्तियों की पूजा को दुष्टात्माओं की पूजा माना जाता था (व्यवस्थाविवरण 32:17; भजनसंहिता 106:37; 1 कुरिन्थियों 10:20)। झूठी शिक्षा को ''दुष्टात्माओं की शिक्षा'' (1 तीमुथियुस 4:1) माना जाता था। [6]मूर्तियों के ऐसे ही विवरण पूरी बाइबल में मिलते हैं। देखें व्यवस्थाविवरण 4:28; भजनसंहिता 115:4-8; 135:15-18; यशायाह 44:12-20; यिर्मयाह 1:16; मीका 5:13; प्रेरितों 7:41. [7]मार्टिन किडुल, *द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन,* द मौफट न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री सीरीज़ (न्यू यार्क: हार्पर एण्ड ब्रदर्स पब्लिशर्स, 1940), 165. [8]बर्टन काफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रैवलेशन* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 216. [9]एल्ड्रेड एकोल्स, *हैवन्ट यू हर्ड? देअर'स ए वार गोइंग ऑन!: अनलॉकिंग द कोड टू रैवलेशन* (फोर्टवर्थ, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1995), 180. [10]डेविड रोपर, *''द डे क्राइस्ट केम (अगेन)'' एण्ड अदर सरमन्स* (डैलस: क्रिश्चियन पब्लिशिंग कं., 1964), 65.

[11]जुडसोनिया में क्लास के लोगों से मैंने कहा कि वे उन बातों की सूची बनाएं, जिन्हें वे जीवन में प्रभु से अधिक प्राथमिकता देते हैं! उन्होंने बहुत ही प्रभावशाली सूची बनाई। [12]यूनानी शब्द *porneia* का अनुवाद ''व्यभिचार'' अवैध कुमार/कुमारी सम्बन्ध के लिए शब्द है (देखें KJV)। इस संदर्भ में यह शब्द सामान्य शारीरिक पाप है। NIV में ''लैंगिक अनैतिकता'' है। [13]ये पाप यूहन्ना के समय पाए जाने वाले विशेष पाप थे और आज भी हैं। इन विशेष पापों को वचन में आमतौर पर इकट्ठे बताया जाता है (देखें यिर्मयाह 7:9; होशे 4:2; गलातियों 5:19-21)। [14]हम पर वही दस आज्ञाएं अब लागू नहीं है, परन्तु दस में से नौ आज्ञाएं नये नियम में दोहराई गई हैं, जिनमें आयत 21 में दिए गए पापों की निन्दा करने वाली आज्ञाएं भी हैं (देखें रोमियों 13:9)। (दस आज्ञाओं में से चौथी आज्ञा ही केवल वह आज्ञा है, जिसे नये नियम में दोहराया नहीं गया: ''सब्त के दिन को पवित्र मानने के लिए याद रखना।'') [15]इस निषेध से घर परिवार की रक्षा भी होती थी। [16]नये नियम में यह यूनानी शब्द तीन बार आता है: यहां, प्रकाशितवाक्य 18:23 में और गलातियों 5:20 में । गलातियों 5:20 में KJV में इस शब्द का अनुवाद "witchcraft" और NKJV में "sorcery" हुआ है।

प्रकाशितवाक्य 9:21 में NIV में ''मैजिक आर्ट्स'' परन्तु प्रकाशितवाक्य 18:3 में ''मैजिक स्पेल'' है। ''भतों को बुलाना'' और ''जादूगरी'' में अन्तर देखने का कोई लाभ हो सकता है: प्रसिद्ध जादूगर किसी रहस्यमयी तांत्रिक शक्ति की सहायता से करतब दिखाने का ढोंग नहीं करते; उनके ''जादू के काम'' हाथ की सफाई से थोड़ा बढ़कर होते हैं, जिन्हें उनके श्रोताओं को समझने की कोशिश करने में आनन्द आता है। [17]डब्ल्यू ई. वाइन *द एक्सपेंडेड वाइन'स एक्पोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट,* संपा. जेम्स ए स्वैन्सन के साथ जॉन आर कोहेल्नगर्गर III (मिनियापुलिस, मिनेसोटा: बैथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984), 1064-65. [18]वही. 1065. [19]नेटिव अमेरिकन चर्च कई कबीलों से मुख्यतया अमेरिका के दक्षिणी पश्चिमी कबीलों के कुछ अमेरिकी भारतीयों की एक धार्मिक संस्था है। इस कलीसिया में पियोट ड्रग के ''सेक्रामेंट'' के इस्तेमाल वाली कुछ शिक्षाएं हैं। [20]''पियोट'' दक्षिण पश्चिमी अमेरिका तथा उत्तरी मैक्सिको में पाए जाने वाले लचकदार कैक्टस को कहा जाता है। इसमें अल्कलॉयड मिस्केलीन होता है, जिससे विभिन्न रंगों तथा उबड़-खाबड़ स्थान के बोध से भ्रम पैदा होता है। इन भ्रमों को अनजान लोग ''दर्शन'' मान लेते हैं।

[21]आपको ऐसे उदाहरण इस्तेमाल करने चाहिए, जिनसे आपके सीखने वाले परिचित हों। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रेरितों के काम, भाग-4'' में पृष्ठ 116 से आरम्भ होने वाले पाठ ''जादू-टोने की चुनौती'' देखें। [22]एम. राबर्ट मुल्होलैंड, जूनि., *रैवलेशन: होली लिविंग इन एन अनहोली वर्ल्ड,* द फ्रांसिस एस्बरी प्रैस कमैंट्री सामा.संस्क., (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: फ्रांसिस एस्बरी प्रैस, 1990), 199. [23]माइकल विल्कोक *आई सॉ हैवन्ड ओपनड: द मैसेज ऑफ़ रैवलेशन,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1975), 102. [24]सात कटोरे अभी आने हैं (अध्याय 15 और 16), परन्तु कटोरों में दिया जाने वाला ज़ोर दण्ड पर होगा न कि चेतावनी पर। [25]मैरिल सी. टैनी *प्रोक्लेमिंग द न्यू टैस्टामेंट: द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1963), 44. टैनी ने जल-प्रलय से पहले के संसार, सदोम और अमोरा, बाबुल और यरूशलेम की बात का हवाला देकर अपनी बात समझाई। [26]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करते हैं तो समझाएं कि कोई गैर मसीही कैसे परमेश्वर के पास आ सकता है और एक भटका हुआ मसीही कैसे वापस आता है। इस पुस्तक में ''जगाने के लिए परमेश्वर की पुकार'' और ''पाप का स्व-विनाशकारी स्वभाव'' पाठ देखें।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. क्या आपने कभी किसी चेतावनी की अनदेखी करके परिणाम भुगता है?
2. परमेश्वर चाहता था कि पाप के भयंकर परिणामों को देखकर लोग मन फिरा लें, परन्तु क्या उन्होंने मन फिराया? (देखें 9:20, 21.) क्या आज लोग मन फिराते हैं? पाप के परिणाम आज भी भयंकर हैं, परन्तु क्या अधिकतर लोग इससे प्रभावित होते हैं?
3. क्या मूर्ति पूजा आज भी समस्या है?
4. आयत 21 में दिए चार पापों की चर्चा करें। क्या ये पाप आज भी पाए जाते हैं?
5. एक दिन, क्या परमेश्वर यह फैसला लेगा कि लोगों को अपनी ओर लाने की कोशिश जारी रखने का कोई कारण नहीं है? तब क्या होगा? आप और मैं न्याय के दिन के लिए कैसे तैयार हो सकते हैं?